अंतरा-शब्दशक्ति

वाह! ज़िंदगी

काव्य संग्रह

साधना छिरोल्या

वाह! जिंदगी

(काव्य संग्रह)

साधना छिरोल्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN 978 93 88102 93 3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा एस २०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष (कार्या.) ०७६३३ २५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८

मूल्य ५५.०० रुपये

आवरण चित्र संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Waah Zindagi by Sadhna Chirolya

वैधानिक चेतावनी इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

वाह! जिंदगी मेरा प्रथम हिंदी काव्य संग्रह है, जिसमें मैंने जीवन के विभिन्न रंगों को अपनी लेखनी के द्वारा पन्नों पर उकेरने की कोशिश की है। मैंने जिंदगी को हंसकर सरलता से जीने की कला को अपनी पंक्तियों में पिरोया है। इस काव्य संग्रह में कान्हा की नटखट बाल लीलाओं का वर्णन है तो वृंदावन की मनमोहक होली का चित्रण भी। कहीं भाई बहिन का प्यार है तो साथ में कजरी की तान भी।

आज के इस आपाधापी के समय में कुछ चीजें कहाँ खो गई पता ही नहीं चला। यह सब है मेरी रचना न जाने कहाँ खो गए में ।

इसमें सावन मास की महिमा है तो शिवशंकर का श्रृंगार भी। दूसरी ओर आज के इंसान की कलुषित मानसिकता का शब्दरूपी चित्रण भी। गुरु की महत्ता है तो गजानन की विदाई भी।

बेटी को आशीर्वाद देती कुछ पंक्तियाँ हैं तो सबके लिये शुभकामना सन्देश। हम सबको रोज चैन की नींद सुलाने वाले सीमा पर डटे वीर जवान का गुणगान तो साथ में हमारा पेट भरने वाले किसान की महत्ता भी।

मेरा वजूद,मेरा अस्तित्व कई लोगों से मिलकर बना है , यह बताती है मेरी रचना अंश ।

रुपयों और सिक्कों का वर्चस्व तो इंसान को उसकी हकीकत बताती रचना काया ।

ग्रामवासियों द्वारा कन्हैया जी को होली खेलने का न्योता भी तो माँ अम्बे की आराधना भी और इसके साथ अपनी मीठी, सोंधी खुशबू फैलाती मेरी प्यारी हिंदी का गुणगान भी। और अंत में

मेरी अपनी शाला की कुछ भूली बिसरी, सुनहरी अनमोल यादें। जिनका सच में कोई मोल नहीं। मुझे सभी को काव्य रूप में शुभकामनायें देना बहुत अच्छा लगता है।

मैं अंतरा शब्द शक्ति की आजीवन ऋणी रहूंगी जिसने मुझे आज इस मुकाम तक पहुँचाया।

आशा है आप सबका आशीर्वाद हमेशा यूँ ही मिलता रहेगा।

साधना छिरोल्या

दमोह (म.प्र)

अनुक्रमणिका

न जाने कहाँ खो गये	7
वाह! जिंदगी (भाग-1)	8
वाह! जिंदगी (भाग-2)	9
समय का पहिया	10
आओ होली खेलें कान्हा	11
वृंदावन की होली	12
महिमा सावन मास की	13
क्षमा प्रार्थना	14
जय शिवशंकर	15
मेरा प्यारा कान्हा	16
जय अम्बे माँ	17
मेरी अभिलाषा	18
गुरु	19
रे वीर जवान	20
जय जवान जय किसान	21
मेरी बिटिया	22
अंश	23
भाग्य	24

काया	25
फासले	26
सजा	27
वाह्! रुपया	28
वाह्! सिक्के	29
भँवरा	30
मेरी हिंदी	31
सुनहरी अनमोल यादें	32

न जाने कहाँ खो गये

वो पीपल की छाँव,वो रस्सी के झूले,

वो गुड्डे की शादी,वो मामुलिया के गाने,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो रेत के घर,वो सीप और पत्थर,

वो मंदिर की होली,वो टेसू के रंग,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो कागज की नाव,वो वर्षा की बूँदें,

वो कागज के पैसे,वो मीना बाजार,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो आँख मिचौली,वो छुपम छुपाई,

वो गिल्ली, वो डंडा,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो चंपा चमेली, वो जूही और बेला,

वो रात की रानी,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो बंदर मदारी,वो रंगीन कठपुतली,

वो कुश्ती, वो दंगल,

न जाने कहाँ खो गये।।

वो शादी की गारी,वो होली की फागें,

वो आल्हा,वो ऊदल, न जाने कहाँ खो गये।।

वाह! जिंदगी (भाग-1)

कुछ अपनी कहिये,कुछ हमारी सुनते चलिये,
जिंदगी को सहजतम बनाते चलिये।।
जिंदगी तो है धूप-छाँव का मेला,
इसे मौसम की रुमानियत समझकर चलते चलिये।।
बहारों के मौसम सदा रहते नहीं,
तो पतझड़ का भी आनंद उठाते चलिये।।
न सूरज बन सके सबके लिये,
तो चाँद की शीतलता ही बनाये रखिये।।
समय का पहिया कब   कहाँ घूम जाये,
तो जो है सामने,उसका ही आनंद उठाते चलिये।।
न परेशां हो ऊँचे लोगों को देखकर,
कभी छोटों को भी देख, शाँति बनाये रखिये।।
अकड़कर बोलने वाले,सदा सही होते नहीं,
तो झुकने वाले के भी दो बोल सुनते चलिये।।
न जाने कौन सी शाम आखिरी हो जाये,
तो सबसे हँसकर बोलते निकलते चलिये।।
जिंदगी को बोझ न समझ ए मुसाफिर,
जीता जागता रंगमंच है ये,यही सोचकर चलते चलिये।
कुछ अपनी कहिये, कुछ हमारी सुनते चलिये,
जिंदगी को सहजतम बनाते चलिये।।

वाह! जिंदगी (भाग-2)

चलो आज एक कम करने चलें,
खुशियों के मोती लुटानें चलें।
गुम होती जा रही, होठों पे हँसी,
तो किसी रोते हुए को हँसाने चलें।।
अब हो रही है उम्र की शाम भी,
तो कुछ सुबह की याद ताजा कर चलें।।
आज फिर चौराहे पे,
मजमा लगा लोगों का,
तो कुछ नेकदिल इंसान ढूंढनें चलें।।
इस भागदौड़ भरी जिंदगी से,
कुछ पल सुकून के चुरानें चलें।।
आज फिर चमका चाँद पूनम का,
तो बिखरती चाँदनी को सहेजने चलें।।
क्या हुआ जो लिपटे हैं सर्प चन्दन से,
उसकी खुशबू को समेटने चलें।।
आज फिर कुछ अच्छे काम किये हैं लोगों ने,
उनको इनाम बाँटने चलें।।
चलो आज एक काम करने चलें,
खुशियों के मोती लुटानें चलें।।

समय का पहिया

समय का पहिया चला जा रहा,
ये साल बीता चला जा रहा।।
किसकी खुशियों को बाँटा है हमने,
किसके ग़मों को साझा किया है,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।
किसने जख्म कुरेदे हमारे,
किसने घावों पे मलहम लगाई,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।
किसने शतरंज की बाजी बिछाई,
किसने जीत हमें है दिलाई,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।
है सुख दुःख तो ईश्वर का खेला,
ये दुनिया तो है एक मेला,
ये भी हमको बता जा रहा,
ये साल बीता चला जा रहा।।
कितनी सामाज सेवा की हमने,
कितने हाथ हैं अपने बढ़ाये,
किसको छोड़ा है बेसहारा,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।

आओ होली खेलें कान्हा

आ जइयो गाँव हमारे कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।
दूध दही के भोजन करियो,
मिश्री के भोग लगइयो कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।
शिवशंकर को मेला भरत है,
गाँव की नदिया किनारे कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।
गाँव के सब लोग लुगाई,
पाँव तुम्हरे पड़े हैं कन्हैया
आ जइयो गाँव हमारे।।
घर घर गौवें घर घर ग्वाले,
राह तुम्हरी तकें हैं कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।
ऐसे रंग में हमकों रँगियो,
सात जन्मों न छूटे कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।
आ जइयो गाँव हमारे कन्हैया,
आ जइयो गाँव हमारे।।

वृंदावन की होली

चलो सखी वृंदावन चलिये,
जहाँ रीत पुरानी होली की।।
केसर,टेसू के रंग बने,
सोने चाँदी की पिचकारी,
जहाँ होली खेलें कुंवर कन्हाई,
राधा जू और बृजवासी।।
जहाँ होली होवे फूलन की,
और होली होवे लट्ठन की,
सरस लगे लड्डू की होली,
जहाँ रीत पुरानी होली की।।
बरसाने,गोकुल और मथुरा,
धूम मची है चारों ओर,
वृंदावन की कुन्ज गलिन में,
रास रचाये नंदकिशोर।।
चलो सखी वृंदावन चलिये,
जहाँ रीत पुरानी होली की।।

महिमा सावन मास की

ये पावन महीना है शिव का,
और श्रीकृष्ण का प्यारा भी,
भाई बहन की जोड़ी अमर रहे,
ये महिमा सावन मास की।।
शिव को बेल की पात चढ़े,
और चढ़े गंग की धार भी,
मंदिर में झूले सज गये हैं,
जहाँ झूलें राधा और गोपाल जी।।
सावन के मेले ख़ूब सजे,
और हिंडोले भी खूब डले,
गूंजे कजरी की तान भी
ये महिमा सावन मास की।।
गोरी के हाँथों में मेहँदी लगी,
और हरी चूड़ियाँ काँच की,
भैया की कलाई राखी से सजी,
ये महिमा सावन मास की।।
हैं ख़ूब सजे अखाड़े भी,
और पहलवान तैयार भी,
कुश्ती दंगल का क्या कहना,
ये महिमा सावन मास की।।

क्षमा प्रार्थना

क्षमा माँगते हम हैं गणेशा,
विद्या के दातार,
सदा हमारे ह्लदय में रहना,
हमरे पालनहार।।
शिवशंकर के प्यारे सुत हो,
पार्वती के लाल,
लम्बोदर,गणपति,
विनायक,
तुम्हरे नाम अपार।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता तुम हो,
हमरे खेवनहार,
सारे अवगुण दूर भगाना,
बुद्धि देना अपार।।
इतर चन्दन का बनेगा पलना,
डोरी रेशमदार,
अगले बरस फिर जल्दी आना,
लेकर खुशियाँ अपार।।

जय शिवशंकर

शिवशंकर को खूब मना लो,
आया महीना सावन का।
दूध दही ,घी,शहद शर्करा,
कनक,बेल की पातियाँ,
और गंग की धार चढ़ा लो,
आया महीना सावन का।।
केसर,अक्षत,चन्दन सोहे,
और आक की पातियाँ,
लौंग,इलायची खूब चढ़ा लो,
आया महीना सावन का।।
नरियल, पान, सुपाड़ी,मिश्री,
दूब, समी की पातियाँ,
और कमल के फूल चढ़ा लो,
आया महीना सावन का।।
फल,मेवा भी खूब चढ़ा लो,
और दाने अनार के,
सबसे ऊपर श्रद्धा भक्ति,
आया महीना सावन का।।

मेरा प्यारा कान्हा

कान्हा मेरा प्यारा प्यारा,
इत उत डोलत है मतवाला,
रोज सुबह से गायें चराये,
नटखटपन से बहुत सताये,
मटकी फोड़े माखन खाये,
ग्वाल ग्वालिन को बहुत छकाए,
आँगन की माटी भी खाये,
तीन लोक मुख में दिखलाये,
इंद्र का अभिमान है तोड़े,
गोवर्धन ऊँगली पे उठाये,
जमुना जी में कूद पड़े है,
नाग कालिया से भिड़ जाये,
पूतना को है मार गिराये,
बकासुर का वध कर जाये,
घुंघराली लट है मतवाली,
मोरपंख उसपे भी सुहाये,
वृंदावन की कुञ्ज गलिन में,
बंसी पर सबको है नचाये।

जय अम्बे माँ

इतनी शक्ति अम्बे माँ दो,
दिल में किसी का दुखा न पाऊँ,
काम, क्रोध,मद, लोभ हटाकर,
निर्मल मन से भजन मैं गाऊँ।।
बुरे कर्म से डरकर रहूँ मैं,
अच्छाई की राह मैं पाऊँ,
दुष्ट जनों को दूर हटाकर,
निर्मल संगति हरदम पाऊँ।।
चन्दन,कुमकुम तिलक लगाकर,
पुष्प और नैवैद्य चढ़ाऊँ,
धूप दीप से करूँ आरती,
सच्चे मन से शीश नवाऊँ।।
इतनी शक्ति अम्बे माँ दो,
दिल मैं किसी का दुखा न पाऊँ।।

मेरी अभिलाषा

हरदम खुशियों का मेला सजे,
सबके इस प्यारे जीवन में।।
टेसू के जैसी भोर मिले,
रजनीगंधा सी शाम ढले,
गुलमोहर जैसी दोपहरी,
हरदम मिले इस जीवन में।।
हर सुबह होली के रंग सजे,
हर शाम दीवाली के दीप जलें,
फागुन के जैसी पुरवाई,
हरदम चले इस जीवन में।।
हर ख्वाहिश पूरी हो सबकी,
सब फूलें फलें आबाद रहें,
खुशियों की बारिश होती रहे,
सबके इस प्यारे जीवन में।।
हरदम खुशियों का मेला सजे,
सबके इस प्यारे जीवन में।।

गुरु

गुरुवर की महिमा है,
इतनी अपरम्पार,
शब्दों में बँधे न,
आदि अनंत अपार।।
गुरुवर है परमात्मा,
इसके रूप अनेक,
न जाने किस वेष में,
दे जायें सन्देश।।
गुरु सँवारे जिंदगी,
देकर अपना ज्ञान,
कब जाने गुरुरुप में,
मिल जायें भगवान।।
बरसे कृपा गुरु की,
बन जायें सब काम,
तीन लोक गुरु में है समाये,
जपिये आठों याम।।

रे वीर जवान

भारत माता करे पुकार,
दिखलाओ तुम शक्ति अपार।।
दुश्मन बैठा पैर जमाये,
अपनी टेढ़ी नजर गड़ाये,
उसको दो मुँह तोड़ जवाब,
भारत माता करे पुकार।।
तुझमें शक्ति,तुझमें भक्ति,
तुझमें बिजली सी है फुर्ती,
रौद्र रूप दिखाओ अपार,
भारत माता करे पुकार।।
माँ बहनें हैं नजर उतारें,
सीमा पर हैं लाल हमारे,
अब तो तेज करो ललकार,
भारत माता करे पुकार।।

जय जवान जय किसान

भारत के ये दो है प्राण,
जय जवान और जय किसान,
दोनों वीर और बलवान,
भारत माता की संतान।।
एक हमारा पेट है भरता,
दूजा दुश्मन से रक्षा करता,
हाथ जोड़ कर इन्हें प्रणाम,
भारत माता की संतान।।
त्याग और साहस की मूरत,
दोनों की है हमें जरुरत,
सदा करो इनका सम्मान,
भारत माता की संतान।।
भारत के ये दो हैं प्राण,
जय जवान और जय किसान।।
चाहे आँधी,चाहे पानी,
चाहे ठण्ड हो बर्फानी,
दोनों करते अपना काम,
भारत माता की संतान।।

मेरी बिटिया

इतनी खुशियाँ बरसे रिमझिम,
आँगन तेरा भर जाये,
चाँद सितारे झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।
क्या चंपा, क्या जूही,बेला,
रात की रानी छा जाये,
गुलमोहर भी झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।
क्या टेसू,क्या पीली सरसों,
आम की बौरें छा जायें,
रंग,गुलाल की फुहार बरसे,
आँगन तेरा भर जाये।।
हम सब करते यही प्रार्थना,
ईश्वर की कृपा बनी रहे,
ऋद्धि सिद्धि भी झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।

अंश

आज मुझे अहसास हुआ है,
मुझमें सबका अंश समाया।।
पिता से कर्मठता मिली,
माँ से मिली सहनशीलता,
भाई से है साहस पाया,
बड़ी बहन से अपार ममता।।
मंझले से है हँसना सीखा,
छोटे से संतुष्टिपन,
मंझली बहन से विद्या पाई,
और छोटी से अल्हड़पन।।
बच्चों से चहकना सीखा,
सखियों से चुलबुलापन,
संतों से है अमृतवाणी,
और गुरु से ज्ञान का धन।।
आज मुझे अहसास हुआ है,
मुझमें सबका अंश समाया।।

भाग्य

न सौभाग्य पर इतराइये,
न दुर्भाग्य को कोसिये,
ये जिंदगी के खेल हैं,
बस खेलते चलिये।।
न भाग्य भरोसे बैठिये,
भरपूर मेहनत कीजिये,
ये जिंदगी के खेल हैं,
बस खेलते चलिये।।
भाग्य और मेहनत का तो,
चोली दामन का साथ है,
बिन भाग्य कुछ फलता नहीं,
बिन मेहनत कुछ मिलता
नहीं,
ये जिंदगी के खेल हैं,
बस खेलते चलिये।।

काया

रे मानव,
तू क्यों इतराये इस काया पर,
ये मिट्टी का खिलौना है,
और मिटटी में मिल जाना है,
क्यों घमंड करे तू,
इस छलावे की सुंदरता पर।।
अभी भी वक़्त है,
संभल जा तू,
कुछ कोशिश तो कर,
कुछ मन को निखार,
कुछ दो पल सुकून के,
कभी तो गुजार।।
चार दिन की चाँदनी है,
फिर ढलेगी ये काया,
और फिर बैठा तू हाथ मले,
कि कुछ भी हाथ न आया।।
रे मानव,
तू क्यों इतराये इस काया पर।।

फासले

जाने कितने बाण कंधे पर,
और कमर में शमशीरें।
तीखे शब्दों के बाण चल रहे,
कलुषित मन की शमशीरें,
हर इंसा है घात लगाये,
कैसे दूजे को चीरें।।
मानवता को ताक पे रखके,
समझ न पाये किसी की पीरें,
जख़्मों पर है नमक छिड़ककर,
हाल वो पूछें धीरे धीरे।।
नीयत हो गई इंसान की ऐसी,
अपने घर को खुद ही तोड़े,
घर का भेदी लंका ढाये,
यही कहावत हरदम जोड़े।।
रोज बनाये ऐसे फासले,
कभी न जो भरने पाये,
जिन्दा की तो बात ही छोड़ो,
मुर्दा को भी न छोड़े।।
जाने कितने बाण कंधे पर,
और कमर में शमशीरें।।

सजा

आज मन मैं उठी है आँधी,
उसे शांत कैसे कर पाऊँ।
ढूंढ रहीं हूँ वे दुशा:शन,
जो घूम रहे स्कूलों के इर्द गिर्द,
सोचती हूँ कलम छोड़कर ,
क्यौं न अब तलवार उठाऊँ।।
आज फिर से निर्भया की,
आत्मा भी तड़पी होगी,
देखकर इन दुःशाशनों को,
अपनी बेबसी पर रोती होगी,
सोचती हूँ इन सबको,
न्याय कैसे अब दिलवाऊँ।।
आज फिर से कृष्णा को तो,
धरती पर आना होगा,
एक बार फिर द्रौपदी को,
दुःशाशन से बचाना होगा,
सोचती हूँ कौन सी,
प्रार्थना मैं अब गाऊँ।।
;

वाह्! रुपया

आज मैंने रूपये का वर्चस्व देखा,
सारी दुनिया को इससे दबते देखा।।
दफ्तरों में फाइलों के ढेर में,
घुसते देखा।।
और मंदिर में,
भगवत् दर्शन की कतार में,
समाते देखा।।
स्कूल में बच्चों को,
दाखिला कराते देखा।।
और अस्पताल में,
इसके दम पर
एक डॉक्टर को,
भगवान बनते देखा।।
इसके बल पर,
एक अपराधी को छूटते देखा,
और एक बेगुनाह को
सजा काटते देखा।।
आज मैंने रूपये का वर्चस्व देखा,
सारी दुनिया को इससे दबते देखा।।

वाह! सिक्के

देश की संस्कृति बताते,

सिक्के हैं अनमोल,

इनसे देश की शान है बढ़ती,

ये मुद्रा है अनमोल।।

क्या जवान!क्या बूढ़े बच्चे!

सबको इनकी चाह,

इनकी खनक है इतनी प्यारी,

सबके मन को भाय।।

इनकी है एक अलग अहमियत,

एक अलग पहचान,

शान,सभ्यता के परिचायक,

मेरा भारत महान।।

भँवरा

डाली डाली डोलता फिरता,
आवारा पर प्यारा सा,
हर एक पुष्प से बातें करता,
भँवरा प्यारा प्यारा सा।।
सुनो पुष्प हरदम मुस्काना,
चाहे जैसी पीड़ा हो,
और कभी तू मत इतराना,
अपनी इस सुंदरता पे।।
चाहे प्रभु के शीश चढ़ो तुम,
या किसी सुंदरी के गजरे में,
किसी के पैरों तले पड़े हो,
या किसी शहीद की अर्थी पर।।
यही सीख मैं हरदम देता,
सारी दुनिया वालों को,
हर एक इंसा खुश रहेगा,
बात जो मेरी माने तो।।

मेरी हिंदी

लिखे भी सुन्दर,दिखे भी सुन्दर,
और गुणों की खान,
ऐसी प्यारी हिंदी हमारी,
हमें इस पर अभिमान।।
सोंधी सोंधी खुशबू इसमें
अपनी माटी की महक भी इसमें,
भारत का है तीन चौथाई,
हिंदी बोले हिंदुस्तान।।
जनमानस की भाषा है ये,
गांधीजी कहते पुरजोर,
नेहरू और शास्त्री ने भी,
दिया हमेशा इस पर जोर।।
गोविन्ददास, गुप्त, द्विवेदी,
और काका कालेलकर,
राष्ट्रभाषा इसको बनाने,
कोशिश करते जीवन भर।।
१४सितम्बर १९४९का है ये शुभ दिन आया,
जब हिंदी ने राजभाषा का दर्जा पाया,
आओ हम सब कसम ये खायें,
मान करें और मान बढ़ाये।।

सुनहरी अनमोल यादें

आज मन फिर पीछे जाने लगा है,
बहुत कुछ याद आने लगा है।।
वो स्वतंत्रता दिवस पर झंडा वंदन,
और उसके बाद फिर स्टेडियम को गमन,
सुबह साढ़े छः बजे स्कूल को जाना,
और सफ़ेद चाक से जूते चमकाना।।
न रिक्शा, न साईकिल, न स्कूटी की चाह,
हँसी ख़ुशी पैदल चले अपनी राह,
वो नीली स्कर्ट और लाल रिबन,
और मन कहे आज फिर कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन।।
वो भाषण,वो नाटक,वो गणित की दौड़,
वो नीबू, वो झंडी,वो तीन टाँग की दौड़,
वो चूड़ा,जीराबटी और समोसा,
और उसके सामने आजकल का पिज्जा भी फीका।।
जादूगर के शो भी देखे,कागज के हैं फूल बनाये,
कठपुतली के नाच देखकर,
हँसते गाते घर को आये,
वो गाँधी जयंती और सरस्वती पूजन,
और मन कहे आज फिर,
कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - साधना छिरोल्या

जन्म - 17 मार्च 1964, जबलपुर

शिक्षा - बी.एस.सी., बी.एड. (गणित)

पता - यूनियन बैंक के सामने, राय चौराहा, दमोह (म.प्र.) 470661

मो. - 7089735135

ई मेल - Sadhnachhirolya123@gmail.com

प्रकाशन -1. गहोई सूर्य अखबार जबलपुर (म.प्र.)

2. गहोई संस्कार, जबलपुर (म.प्र.)

3. लोकजंग, भोपाल (म.प्र.) आदि में रचनाओं का प्रकाशन

- भाषण, नाटक, वाद-विवाद, तात्कालिक निबंध, कविता एवं सुलेख प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त।

गहोई समाज एवं हितकारिणी स्कूल जबलपुर द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिए सम्मानित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-93-3

मूल्य- 55/-